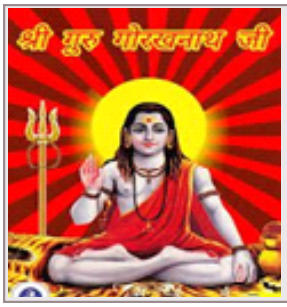

गुरु गोरखनाथ जी
राजकीय महाविद्यालय हिसार

हिंदी
विभागीय पत्रिका

हिंदी सरल है, सशक्त है, हृदयों को जोड़ने वाली भाषा है। इसे अपनाएं और भारतीय होने का गर्व अनुभव करें।

राजपाल

सत्र : 2024-25

मार्च, 2025

हिन्दी विभागीय पत्रिका

हिंदी ... साहित्य... प्रौद्योगिकी...

हिंदी समृद्ध परम्परा की अगली कड़ी

वर्ष : 01 अंक 03 मार्च 2025
चैत्र | विक्रम संवत-2082

संस्थापक सम्पादक

डॉ राजपाल

सहायक सम्पादक

डॉ राजेंद्र प्रसाद
शमशेर सिंह

छात्र सम्पादक

किरण रानोलिया
रिनू
राहुल
संतोष

सम्पादकीय कार्यालय

हिंदी विभाग, गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय हिसार

9466370922, 9255451522, 9785775350

gchisarhindi@gmail.com
dr.rajhisari@gmail.com

एक नज़र

प्राचार्य संदेश
संपादकीय
गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

परिचय

महादेवी वर्मा
सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन "अज्ञेय"

साहित्य प्रश्नोत्तरी
शब्द-सम्पदा
प्रशासनिक शब्दावली
पुस्तक समीक्षा
डॉ. राजपाल की रचना संसृति
हिन्दी की पुकार

संदेश

आज का युग तकनीक का युग है, जहाँ भाषा और प्रौद्योगिकी का समन्वय समय की माँग बन गया है। हिंदी, जो विश्व की चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, को इस डिजिटल दौर में नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने के लिए तकनीकी प्रगति के साथ कदमताल करना आवश्यक है। मशीनी अनुवाद, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, स्वचालित भाषा प्रसंस्करण (NLP), और वॉयस रिकग्निशन जैसी तकनीकों ने हिंदी के प्रयोग को नया आयाम दिया है।

हिंदी के साथ सबसे बड़ी चुनौती इसकी जटिल व्याकरणिक संरचना और बहुलतावादी रूपों को कम्प्यूटेशनल मॉडल्स के अनुरूप ढालना है। हिंदी में शब्दों के लिंग, वचन, कारक, और क्रिया-रूपों की विविधता एनएलपी सिस्टम्स के लिए एक बड़ी बाधा रही है। साथ ही, हिंदी की अनेक बोलियाँ और उपभाषाएँ (जैसे अवधी, भोजपुरी, राजस्थानी) भाषा प्रसंस्करण को और जटिल बनाती हैं।

वर्तमान में, गूगल ट्रांसलेट, आईबीएम वाटसन, और भारतीय तकनीकी संस्थानों द्वारा विकसित हिंदी एनएलपी टूल्स ने काफी प्रगति की है। सरकारी पहलों जैसे *"भाषिनी"* (AI-आधारित भाषा मॉडल) और *"दीपएनएलपी"* ने हिंदी को डिजिटल स्पेस में मजबूती दी है। मोबाइल एप्स, सोशल मीडिया, और ई-गवर्नेंस प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी की उपस्थिति बढ़ी है।

हिंदी को तकनीकी रूप से और समृद्ध करने के लिए निम्न कदम उठाए जाने चाहिए:

1. डेटा संग्रहण: हिंदी के विविध रूपों पर आधारित बड़े डेटासेट्स तैयार करना।
2. स्थानीयकरण: तकनीकी शब्दावली को हिंदी में विकसित करना।
3. शोध एवं शिक्षा: भाषा प्रौद्योगिकी को हिंदी पाठ्यक्रमों से जोड़ना।
4. सहयोग: सरकार, निजी क्षेत्र और शिक्षण संस्थानों का सामूहिक प्रयास।

हिंदी का तकनीकीकरण न केवल इसके वैश्विक प्रसार के लिए आवश्यक है, बल्कि यह भारत की डिजिटल संप्रभुता का भी प्रतीक है। हमें हिंदी को "टेक-सक्षम" भाषा बनाने के लिए नवाचार और संसाधनों का समुचित उपयोग करना होगा। यह समय हिंदी को केवल साहित्य और संवाद तक सीमित न रखकर, उसे विज्ञान, प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भाषा बनाने का है।

प्राचार्य
डॉ विवेक कुमार सैनी

संपादकीय

शोध और विज्ञान संचार में भारतीय भाषाओं की भूमिका: नए युग की आवश्यकता

वैश्विक ज्ञान-विज्ञान के इस युग में जहाँ अंग्रेज़ी का वर्चस्व है, वहीं भारतीय भाषाओं—खासकर हिंदी—में शोध और वैज्ञानिक संचार को बढ़ावा देना राष्ट्रीय प्राथमिकता होनी चाहिए। भाषा ज्ञान की वाहक होती है, और जब तक हम विज्ञान एवं शोध को मातृभाषा तक सीमित नहीं करेंगे, तब तक समाज का एक बड़ा वर्ग इससे वंचित रहेगा।
अंग्रेज़ी पर निर्भरता: उच्च शिक्षा और शोध पत्रों में अंग्रेज़ी का दबदबा, जिससे स्थानीय भाषाओं में ज्ञान का अभाव।
सीमित संसाधन: हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण शोध सामग्री, पत्रिकाओं और शब्दावली का अभाव।
डिजिटल विभाजन: इंटरनेट पर हिंदी/भारतीय भाषाओं में विज्ञान-संबंधी सामग्री की कमी।
समावेशी विकास: गाँवों और छोटे शहरों के छात्रों व शोधार्थियों तक विज्ञान को पहुँचाना।
सांस्कृतिक संरक्षण: तकनीकी शब्दावली का भारतीय भाषाओं में विकास कर भाषाई समृद्धि बनाए रखना।
राष्ट्रीय नवाचार: स्वदेशी शोध को बढ़ावा देकर 'आत्मनिर्भर भारत' की दिशा में कदम बढ़ाना।
शब्दावली का अभाव: विज्ञान और तकनीकी शब्दों का हिंदी/भारतीय भाषाओं में पर्याप्त अनुवाद न होना।
शोध पत्रिकाओं की कमी: भारतीय भाषाओं में पियर-रिव्यूड जर्नल्स का अभाव।
सामाजिक मानसिकता: "अंग्रेज़ी = बौद्धिक श्रेष्ठता" की धारणा।
राष्ट्रीय भाषा प्रौद्योगिकी मिशन: सरकारी एवं निजी संस्थानों द्वारा हिंदी व अन्य भाषाओं में डिजिटल संसाधन विकसित करना।
बहुभाषी शोध प्लेटफॉर्म्स: हिंदी, तमिल, बांग्ला आदि में ऑनलाइन जर्नल्स को प्रोत्साहन।
शिक्षा नीति में एकीकरण: NEP 2020 के अनुसार मातृभाषा में तकनीकी एवं वैज्ञानिक शिक्षा को बढ़ावा।
भाषा प्रौद्योगिकी का उपयोग: AI, मशीन ट्रांसलेशन (जैसे भाषिणी) और NLP टूल्स द्वारा भारतीय भाषाओं में शोध सामग्री को सुलभ बनाना।
अनुवाद परियोजनाएँ: वैश्विक शोध को हिंदी व अन्य भाषाओं में अनुवादित करना।
युवा शोधकर्ताओं को प्रोत्साहन: भारतीय भाषाओं में शोध पत्र लिखने वालों को अकादमिक मान्यता।
भारतीय भाषाओं में विज्ञान संचार और शोध को बढ़ावा देना केवल भाषाई समानता का मुद्दा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय प्रगति का आधार है। हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाएँ ज्ञान की वाहक बनें, इसके लिए शैक्षणिक संस्थानों, सरकार और समाज को मिलकर प्रयास करने होंगे। आइए, हम एक ऐसे भारत का निर्माण करें जहाँ विज्ञान और शोध सभी की भाषा में उपलब्ध हो!

डॉ राजपाल

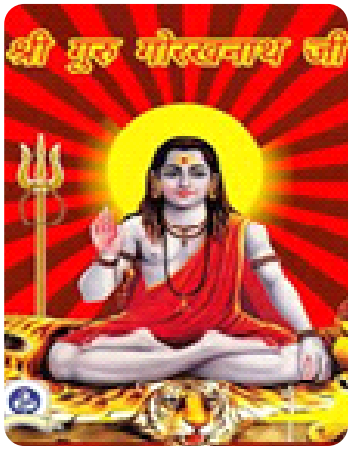

गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

गतांक से आगे..

वंश और नामकरण: गोरक्ष नाम पर तो कई विद्वानों ने विचार किया, परंतु उसके पूर्व उनका क्या नाम रहा होगा? ये आज भी एक रहस्य है। क्योकि जबकोई संन्यास लेता है। तो वह उसे अपना जन्मान्तरण मानता है, वह पहले की सारी चीजों को भूल जाता है। इसीलिये गोरखनाथ ने अपने योगी बनने के पूर्व के जीवन का कोई उल्लेख नही किया कि उनका जन्म कहाँ हुआ था, उनके माता-पिता कौन थे, उनका नाम क्या था? गोरक्ष जिसका अर्थ है। जीवों का रक्षक, शिव के असंख्य नामों में से ये एक नाम है।

शिव का अवतार माने जाने के कारण यह नाम सार्थक भी हैं उन्होने अपने दया, ज्ञान, स्नेह से कितने ही लोगों जोकि पशुवत जीवन बिता रहे थे उनका उद्धार किया 'सिद्ध सिद्धान्त पद्धति' की एक हस्तलिखित प्रति के अन्तिम श्लोक में इनका नाम शंकरनाथ दिया गया है। डॉ० कल्याणी मलिक द्वारा सम्पादित पद्धति के अलावा इसी नाम का सौ श्लोकों का एक और अप्रकाशित ग्रंथ है। उस ग्रंथ का प्रथम श्लोक इस प्रकार है

परिपूर्ण परं ब्रह्म ध्यायं ध्यायमहर्निशम् । व्याकरोमि विवेकार्थ सिद्ध सिद्धांत पद्धतिम् ।

उनकी पुष्पिका में इस प्रकार लिखा मिलता है

इत्येव परमेश्वरो भुवि चिदान न्दाय सद्धमिते । शिष्यायाह विराट् स्वरूपम खिलं सम्यग्रहस्यं परम्। विज्ञायैतद्धा परं परतरं सौवर्णदेहं महस्स्वराज्यं । हृदयाव्ज महयतसितं पश्येदिति प्रेमतः ।।'

अगर इसे गोरक्षनाथ की रचना माने तो इनका अन्य नाम परमेश्वरयोगी सामने आता है। यद्यपि कुछ विद्वानों ने सिद्ध सिद्धान्त पद्धति को किसी नित्यनाथ द्वारा रचित माना है तो भी इसमें कोई संदेह नही कि मूल कृति गोरखनाथ की ही है। राज गुह्य में गोरखनाथ स्त्रोत में कहा गया है कि 'ग' कार गुण संयुक्त 'र' कार रूप लक्षण 'क्ष' कार अक्षय ब्रह्म श्री गोरक्ष नमोऽस्तुते। इसके द्वारा गोरक्ष शब्द का महात्मय वर्णन किया गया है।'

शिव पुराण में उन्हें शिव का अवतार बताया गया है। योगी भी उन्हें शिव का अवतार मानते है। ये बात गोरखनाथ की आरती में भी आती है। "शिव पुराण" में ब्रह्मा जी ने शिव के अवतारो की संख्या में गोरक्षनाथ को शिवानमार बताया है।" भगवान शिव ने गोरक्ष रूप में आकर योग-योगियों की तथा योग शास्त्र की सत्यता को यम नियम आदि अंगों द्वारा प्रमाणित किया

शिव गोरक्ष रूपेण, योग शास्त्र जुगोपह ।। यमाधड् गेंर्यभास्थाने, स्थापिता योगिनो ऽपि च।।

गोरक्ष अथवा गोरक्षनाथ के नामकरण के विषय में यह किवदन्ति प्रसिद्ध है कि उनका जन्म गोबर में हुआ। इसी कारण उनका नाम गोरख पड़ गया। कुछ लोगों का मानना है कि ये आजीवन गाय के दूध का सेवन करते रहे इसलिये उन्हें गोरक्ष कहा जाता है। "गो" शब्द का अर्थ है पृथ्वी तथा "रक्ष" का अर्थ है रक्षक। इस कारण से पृथ्वी के रक्षक नाथ होने के कारण भी उनका नाम गोरख पड़ गया होगा। परंतु गो-इन्द्रियाँ तथा रख-रक्षक अतः इन्द्रियों के रक्षक नाथ ऐसा अधिक उपयुक्त मालूम पड़ता है। क्योंकि वह महान योगी तथा इन्द्रियों के साधक थे।गोरखनाथ का जीवन एक अत्यन्त जटिल और दुरूह तथ्यों का सामना है जिसके किवदन्तियों में से ऐतिहासिकता को छान-छान निकालना पड़ता है। गोरखनाथ का व्यक्तित्व बहुत व्यापक था, जिसमें अनेक सम्प्रदायों का समन्वय हुआ। इसके नाम के विभिन्न रूपान्तर मिलते है

- गोरक्ष हठयोग प्रदीपिका, विभिन्न तंत्र तथा श्यामारहस्य।
- गोरक्षनाथ - महावर्णवंतत्र, योगिसंप्रदाविष्कृति, सिद्ध सिद्धान्त पद्धति।

- गोरक्षण नाथ वर्णरत्नाकर।
- गोरक्षपा सरक्य विहार की सूची।'

नामों के ये रूपान्तर देने का ये प्रायोजन है कि ये अपने समय के बहुत प्रसिद्ध और अतिमान्य महासिद्ध थे और विभिन्न सम्प्रदायों के ग्रंथ इन्हें आदर के साथ स्मरण करते थे। स्कंध पुराण में भगवार आदिनाथ शिव जगदम्बिका के पूँछने पर स्वयं गोरक्षनाथ के आश्रम का निर्देश कहते है

"तस्माद् दक्षिणते देवि । गोरक्षश्रम रक्षकम् । यत्र सिद्धों महादेवि । गोरक्षों वसत ऽनिशम् । तल्लिड गंतु प्रवक्ष्यामि, श्रुण पुण्यतम् स्थलम् । महातप्त जलं तत्र वर्तते, सर्वदैव हि। तत्र स्थितित्वा सप्त रात्रं जपनवे शिवभुत्तमम् ।। सिद्धों भवति वेशि। यथा गोरक्ष उत्तम्: ।

हे देवि, उससे दक्षिण की ओर अत्यन्त रमणीय एवं पवित्र गोरक्षाश्रम है। जहाँ पर सिद्धाधिराज गोररखनाथ निवास करते हैं। उस महापीठ का चिह्न बताता हूँ, वह अत्यन्त रमणीय, पुण्यमय है, सर्वदा जहाँ अत्यन्त उष्ण जल विद्यमान है। जो पुरूष सात रात तक शिव का जप करता हुआ

निवास करे, वह साक्षात् गोरक्ष जैसा हो जाता है।'

नाथ पंथ के मुख्य सिद्धांतों का वर्णन करने का एक ग्रंथ है। सिद्ध सोपान पद्धति। इसका अपर नाम है। अमृत सिद्धि योग। इसके रचयिता सिद्ध विरूपाक्ष ने अपने ग्रंथ में भी इनका नाम गोरक्षनाथ बताया है। अमृत सिद्धि योग के प्रारम्भिक भाग में गुरू की वंदना करते हुये सिद्ध विरूपाक्ष ने लिखा है

श्री मद् गोरक्ष नाथय नमस्यन्ताप हारिणे। मुखे सार्थ भावाय सिद्ध वर्त्मनि गच्छमान् ।

ये कहा जा सकता है कि इनके कई नाम प्रचलित है, परंतु सर्वाधिक मान्य दो ही नाम है 1. गोरखनाथ, 2. गोरक्षनाथ। डॉ० - मोहन सिंह जी डब्लू० ब्रिग्स, डॉ० रांगेय राघव, डॉ० पीताम्बर दत्त बहुथ्वॉल, आदि ने गोरखनाथ नाम को मान्यता दी है। गोरखनाथ के विषय में कुछ निश्चित कह पाना कठिन है अतः किवदन्तियों, कथाओं और विश्वासों के आधार पर कुछ अनुमान अवश्य लगाया जा सकता है।

गुरु गोरखनाथ के पद

अवधू ऐसा नगर हमारा, तिहाँ जोवौ उजू द्वारं । अरध उरध बजार मंड्या, गोरख कहै बिचारं ॥ टेक ॥ हरि प्राण पातिसाह साह विचार काजी। पंच तत अजहंदार मन पवन दोऊ हस्ती घोड़ा ग्यांन अखै भंडारं ॥ काया हमारें सहर बोलिये, मन बोलिये हुजदारं । चेतनि पहरै कोतवाल बोलिये, चोर न झंकै द्वारं ॥ तीन सै साठ चीरा गढि रचीले सोलह खणिलै खाई। नव दरवाजा प्रगट दीसै, दसवाँ लख्या न जाई ॥ अठारह भार कोठ कठंजरा लाइलै बहतर कोठड़ी निपाई। नवं सूत्र ऊपरै जंत्र फिरै तब गढ लिया न जाई ॥ अनहद घड़ी घड़ियाल बजाइलै परम जोति दुई दीपक लाई। काम क्रोध दोइ गरदन मारिलै ऐसी अदली आदम चलाई ।। तहां सत्य बीबी संतोष साहिजादा खिमा भगति द्वै हाई। आदिनाथ नाती मछिंद्र पूता, काया नगरी गोरख बताई ॥

इस पद में गोरख जी ने शरीर का वर्णन नगर के रूप में किया है। वह कहता है- हे साधु ! हमारा नगर (शरीर) इस प्रकार है। वहाँ तुम जो द्वार (मुख) देखते हो, उसमें बाजार (श्वास-प्रश्वास) की रचना है। गोरख विचार कर कहता है कि प्राणों के स्वामी हरि इसके राजा हैं। विचार इसका काजी है। पाँच तत्त्व इसके वजीर हैं। मन और प्राणवायु इसके घोड़े हैं। ज्ञान इसका अक्षय कोष है। शरीर को ही मैंने शहर कहा है और मन को हुजदार (सेनापति)। इसके पहरे पर बैठा चेतन इसका कोतवाल है। काम, क्रोध आदि चोर इसमें झाँक भी नहीं सकते। शरीर का यह दुर्ग तीन सौ साठ पत्थरों (हड्डियो) से बना है। इसमें सोलह खाई हैं (पाँव का अँगूठा, अंगुष्ठ मूल, गुदा, मेढ्र, उड्डियान, नाभि, हृदय, कंठ, घंटिका, जिह्वामूल, ऊर्ध्व दंतमूल, नासिकाग्र, नासिका मूल, भ्रूमध्य, ललाट और नेत्र)। इस शरीर में नौ द्वार हैं जो प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं। दसवाँ द्वार ब्रह्मरन्ध्र है जो दिखाई नहीं देता। यह शरीर अठारह भार को पिंजरा है (इसमें अठारह पसलियाँ हैं)। इसमें बहत्तर नाड़ी जल के कोठे हैं। इस शरीर पर नौ द्वारों के

यन्त्र (दो आँखें, दो नाक, दो मुँह, दो कान, गुदा और लिंग) घूमते रहते हैं। इस शरीर रूपी किले पर अधिकार कर पाना कठिन है।

इसमें अनहद शब्द की घंटियाँ और घड़ियाल बजते हैं। प्रभु ने

इसमें मन और पवन दो दीपक (संवेदना साधन) लगा रखे हैं।

इसमें काम और क्रोध चक्कर मारते हैं। ऐसा आदम (ईश्वर) ने हुक्म चला रखा है। इस शरीर में सत्य रानी के समान है और सन्तोष राजकुमार है। क्षमा और भक्ति दो रक्षक हैं। आदिनाथका पौत्र और मच्छन्दरनाथ का पुत्र गोरख कहता है कि यह शरीर, राजा के नगर के समान है।

गोरखनाथ जी का मंदिर गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

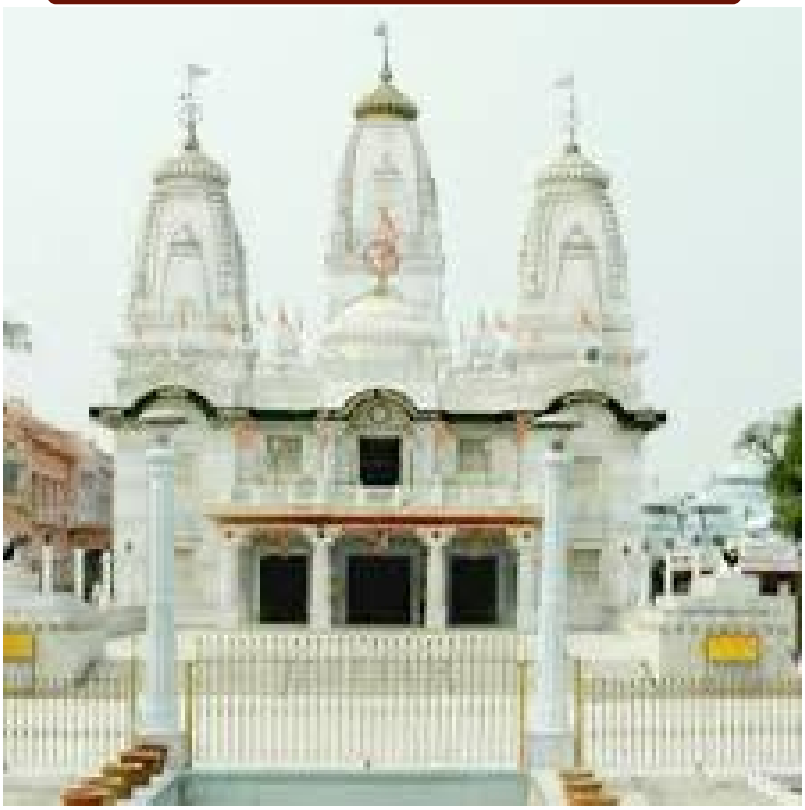

महादेवी वर्मा

एक परिचय

महादेवी वर्मा

जन्म :- 26 मार्च 1907

जन्म स्थान:- फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश

प्रसिद्ध रचनाएं:- रश्मि , यामा, नीरजा, दीपशिखा, निहार, संध्या।

उपाधि :- आधुनिक युग की मीरा।

अन्य योगदान :-

रेखाचित्र, निबंधकार, स्वतंत्रता सेनानी,महिला अधिकारकर्मी, शिक्षाविद

पुरस्कार :-

ज्ञानपीठ पुरस्कार:- 1982 में 'यामा' कविता संग्रह पर

भारत भारती पुरस्कार :- 1982

साहित्य अकादमी पुरस्कार :- 1971

सेक्सेरिया पुरस्कार :- 1934 'नीरजा' पर

पद्मभूषण (मरणोपरांत) :-1988

मृत्यु :- 11 सितंबर 1987

प्रश्न :- आधुनिक युग की मीरा किसे कहा जाता है ?

प्रश्न :- महादेवी वर्मा को मरणोपरांत कौन -सा पुरस्कार मिला हैं ?

प्रश्न :- महादेवी वर्मा को सेक्सेरिया पुरस्कार किस रचना पर मिला हैं ?

संकलन-रीनू, हिन्दी पूर्वार्ध

कम्प्यूटर विषयक

AI (Artificial Intelligence) "कृत्रिम बुद्धिमत्ता"

Machine Learning (ML)मशीन अधिगम (एमएल)

Neural Network स्नायविक जाल

Algorithm कलन विधि / अल्गोरिदम

Data Mining डेटा खनन

Chatbot संवादी यंत्र / चैटबॉट

Deep Learning गहन अधिगम

Automation स्वचालन

Computer Vision कंप्यूटर दृष्टि

Natural Language Processing (NLP) प्राकृतिक भाषा संसाधन (एनएलपी)

शब्द शुद्धि

संग्रह- संगृह
संग्रहीत- संगृहीत
एकत्रित- एकत्र
अहसास- एहसास
एक्य- ऐक्य
एच्छिक- ऐच्छिक
एतिहासिक- ऐतिहासिक
एक्ट- ऐक्ट
ओकात- औक़ात
ओचित्य- औचित्य

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन "अज्ञेय"

एक परिचय

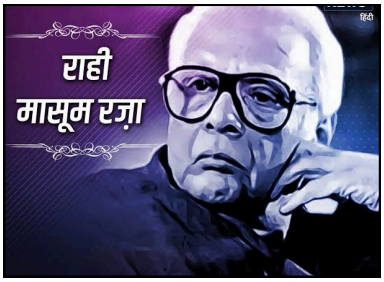

1 सितंबर 1927 - 15 मार्च, 1992

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन "अज्ञेय"

जन्म सन- 1911 ईस्वी में
मृत्यु सन -1987 में
काव्यगत विशेषताएं - हिंदी में प्रयोगवादी के प्रवर्तक, व्यक्तिगत भावनाओं की अभिव्यक्ति
भाषा - अतुकांत छंदों में काव्य रचना प्रसंगसारणी
भाषा शैली - शब्द प्रयोग में बड़ी सावधानी, अनुभूतियों की अभिव्यक्ति में भाषा गंभीर, सरल विषय के वर्णन में भाषा सरल हो जाती है|
रचनाएं - आंगन के पार द्वार, अरी ओ करुणा, हरी घास पर क्षण भर

1. Priyanka - 1/3/2003
2. Anu - 18/3/2002
3. Mamta Rani - 20/3/2004
4. Shallu - 21/3/2002
5. Diya Kumari - 22/3/2004
6. Mohit - 22/3/1998
7. MUSKAN - 01/03/2003
8. MANJU - 06/03/2002
9. VANDANA - 27/03/2003
10. Aman - 10/03/1998
11. RAJVEER - 16/03/1997
12. DEEPIKA - 10/03/2004

प्रश्न-अज्ञेय किस काव्यधारा के कवि थे|
प्रश्न -अज्ञेय का जन्म स्थान क्या है |
प्रश्न -अज्ञेय का पुरा नाम क्या है|
प्रश्न -अज्ञेय की शैली कैसी है|

संकलन-रीनू, हिन्दी पूर्वार्ध

1. हिंदी साहित्य के आदिकाल का समय महाराज भोज के समय से हम्मीर देव के समय तक किसने माना है? - आचार्य शुक्ल
2. आचार्य शुक्ल ने हिंदी साहित्य का आविर्भाव किससे माना है? - प्राकृत की अंतिम अपभ्रंश अवस्था से
3. "उस समय जैसे 'गाथा' कहने से प्राकृत का बोध होता था, वैसे ही 'दोहा' या दूहाकहने से अपभ्रंश या प्रचलित काव्यभाषा का पद्य समझा जाता था।" - कथन किसका है? - आचार्य शुक्ल
4. जोइन्दु नामक कवि की छठीं शती की 'परमात्म प्रकाश' तथा 'योगसार' नामक रचनाओं से अपभ्रंश में दोहा-काव्य आरंभ होता है।
5. अब्दुल रहमान कृत 'संदेहरासक' एक खण्डकाव्य है, जिसमें विक्रमपुर की एक वियोगिन के विरह की कथा है।
6. आचार्य शुक्ल ने अपने इतिहास ग्रंथ में सिद्धों, जैनों एवं नाथों की रचनाओं को किसके अंतर्गत रखा है? अपभ्रंश काव्य
7. आचार्य शुक्ल के अनुसार अपभ्रंश नाम पहले-पहल कहाँ मिलता है? - बलभी के राजा धारसेन द्वितीय के शिलालेख में
8. 'प्राकृत प्रकाश' ग्रंथ के रचयिता हैं- वररुचि
9. 'देसिल बअना सब जन मिट्ठा। ते तैसन जंपओं अवहट्ठा।।' - पंक्तियाँ किसकी हैं? - विद्यापति
10. 'बालचंद बिज्जावहू भाषा। दुहु नहिं लग्गइ दुज्जन हासा।।' - पंक्तियाँ किसकी हैं? - विद्यापति
11. आचार्य शुक्ल ने आदिकाल के अंतर्गत 'देशभाषा' शब्द किसके लिए प्रयुक्त किया है? - बोलचाल की भाषा के लिए
12. 'आदि पुराण' और 'उत्तर पुराण किसकी रचना है- पुष्पदंत
13. किस सिद्ध कवि का एक और नाम 'सरोजवज्र' भी है? - सरहपा
14. सिद्धों की संख्या कितनी है? -८४
15. सरोजवज्र, राहुलभद्र आदि किस सिद्ध कवि के अन्य नाम है? - सरहपा
16. भरतमुनि ने लोकभाषा को 'अपभ्रंश' नाम न देकर क्या कहा है? - देशभाषा
17. हिंदी के मुख्य सिद्ध कवि है- सरहपा, शबरपा, लुइपा, डोम्भिपा, कण्हपा, कुक्कुरिपा, तंतिपा।

शब्द-युग्म
(समान-सा उच्चारण किंतु भिन्न अर्थवाले शब्द)

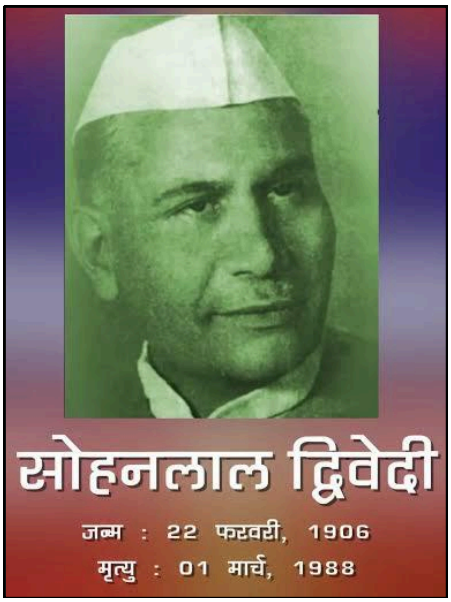

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जो उच्चारण एवं लेखन में काफी समानता लिए हुए होते हैं किंतु थोड़ी-सी भिन्नता से भी उनके अर्थ नितांत अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार के शब्दों के उच्चारण एवं लेखन की समानता-असमानता और अर्थ-भिन्नता के प्रति विशेष जागरूकता नहीं दिखाई जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। इसलिए भाषा की शुद्धता की दृष्टि से इस प्रकार के शब्दों की विशेष जानकारी आवश्यक है। शब्द का अर्थ मूलतः उसके प्रयोग में निहित रहता है, अतः परीक्षा में भी शब्द के अर्थ को वाक्य में प्रयोग भगों करके स्पष्ट करना चाहिए।

शब्द अर्थ

अस्व- धनहीन
अश्म- पत्थर
अहम्- अहंकार
अहम- महत्त्वपूर्ण
अस्ति- है (अस्तित्वमान)
अस्थि- हड्डी
हस्ती- हाथी, सं., अस्तित्व (फा)
अभिसार- प्रेमी से छिपकर मिलना
अभीसार- आक्रमण
अमर्ष- क्रोध
अवमर्ष- आलोचना
असार- सार-रहित, निरर्थक
आसार- लक्षण, चिह्न मूसलाधार वर्षा
अभेद- अंतर नहीं
अभेद्य- न टूटने योग्य
अपेक्षा- आवश्यकता
उपेक्षा- अवहेलना, निरादर

शुद्ध वर्तनी प्रतियोगिता में संतोष ने मारी बाजी

हिसार। गुरु गोरखनाथ राजकीय महाविद्यालय में शुद्ध वर्तनी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का संचालन डॉ. राजपाल ने किया, जिसमें लगभग 60 बच्चों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में एमए हिंदी प्रथम वर्ष की संतोष प्रथम, द्वितीय स्थान वंदना, तृतीय स्थान राहुल ,अनु, रीना, खुशबू ने प्राप्त किया तो वही चौथा स्थान विजय, मनीषा, मंजू और पांचवां स्थान स्नेवा ,दीपिका, पूनम, किरण ,प्रियंका ने प्राप्त किया। हिंदी विभाग में डॉ. सीमा, डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने विजेता बच्चों का सम्मानित किया। संवाद

प्रशासनिक शब्दावली

राजकीय प्रशासन एवं अन्यत्र भी हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं का चलन है इसलिए अंग्रेज़ी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। यहाँ भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित विविध शब्दावलियों से मुख्य मुख्य शब्दावली दी जा रही है। यह शब्दावली ही अधिकृत है, अतः शब्दों के इसी हिंदी अनुवाद को प्रयोग में लेना चाहिए।

Cabinet = मंत्रिमंडल

Cadre = संवर्ग

Calling = व्यवसाय

Camera Meeting = गुप्त बैठक

Camp = कैंप/शिविर

Campaing = अभियान/विशेष प्रचार

Cancel = रद्द करना

Candidate = उम्मीदवार/प्रत्याशी/ अभ्यर्थी

Contigencies = आकस्मिक व्यय

Contingency = आकस्मिकता

Continuation Sheet = अनुवर्ती कागज

Continue in force = पद पर बने रहना

Contraband = निषिद्ध

Contract Service = संविदा सेवा

Contribution = अंशदान/योगदान

Control Chart = नियंत्रण चार्ट

Capital = पूँजी/राजधानी

Capitation Fee = प्रतिव्यक्ति फ़ीस

Career = वृत्ति/जीविका

Carried down = तलशेष

Carried Forward = अग्रेनीत शेष

Cartage = गाड़ी-भाड़ा/दुलाई

Condition = शर्त/स्थिति

Condone = माफ़ करना

Conduct = आचरण/कार्य संचालन

Conference = सम्मेलन

Confidential = गोपनीय/अंतरंग

Confirm = पुष्टि करना/स्थायी

Confirmity = अनुरूपता/अनुसरण

Confiscate = ज़ब्त करना, अधिहरण करना

Connivance = मौन सहमति

Consecutive = लगातार/क्रमिक

Consignment = प्रेषण

Consignor = प्रेषक

Consolidate = समेकित करना/संचित करना

पुस्तक समीक्षा

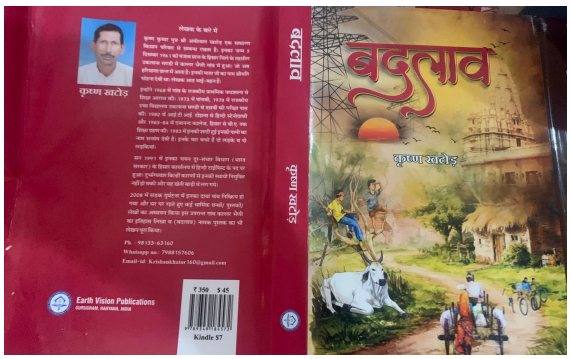

लेखक: कृष्ण कुमार खटोड़
पुस्तक: “बदलाव”
📖 मूल्य: ₹350.00
अर्थ विजन पब्लिकेशन्स
एच-23/16, डी.एल.एफ. फेज-1 गुरुग्राम - 122 002 (हरियाणा) भारत

साहित्योत्सव संपन्न

7 से 12 मार्च तक नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी द्वारा एशिया के सबसे बड़े छह दिवसीय साहित्योत्सव का आयोजन प्रख्यात अंग्रेजी नाटककार श्री महेश दत्तानी के मुख्य आतिथ्य में किया गया। उद्घाटन केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने किया। संस्कृति मंत्रालय की संयुक्त सचिव श्रीमती अमृता प्रसाद साराभाई भी उपस्थित रहीं। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने साहित्य अकादेमी की उपलब्धियों के विषय में अपने विचार व्यक्त किए। अनेक सत्रों में बहुभाषी कविता और कहानी पाठ किए गए। कार्यक्रम में आयोजित २० विभिन्न कार्यक्रमों में १०० से अधिक लेखकों ने सहभागिता की। प्रख्यात अंग्रेजी लेखक श्री उपमन्यु चटर्जी ने संवत्सर व्याख्यान प्रस्तुत किया एवं प्रख्यात बाँसुरी वादक श्री राकेश चौरसिया ने बाँसुरी वादन प्रस्तु किया। कार्यक्रम में गोवा के राज्यपाल श्री पी.एस. श्रीधरन पिल्लै, भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री दीपक मिश्रा सहित अनेक लेखकों-विद्वानों ने भाग लिया। पूरे समारोह में १०० से अधिक सत्रों में ७०० से अधिक प्रसिद्ध लेखक-विद्वानों ने भाग लिया और इसमें ५० भारतीय भाषाओं का प्रतिनिधित्व हुआ।

कृष्ण कुमार खटोड़ का साहित्य ग्राम्य जीवन और समाज के सूक्ष्म विश्लेषण का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। उनके लेखों में मानवीय अंतर्दृष्टि और सामाजिक परिवर्तनों का गहन अवलोकन मिलता है। उनकी पुस्तक “बदलाव” केवल लेखों का संग्रह नहीं, बल्कि समाज के बदलते स्वरूप का दस्तावेज़ है, जो व्यक्ति के सोचने-समझने की शक्ति को नया आयाम प्रदान करता है।

“बदलाव” में सम्मिलित लेख धर्म, समाज, राजनीति, व्यवहार, नैतिकता और व्यक्तिगत मूल्यों के परिवर्तनों को दर्शाते हैं। लेखक ने अपने अनुभवों, ऐतिहासिक तथ्यों, समाचारों और साहित्यिक संदर्भों के माध्यम से समाज के विविध पहलुओं की पड़ताल की है। पुस्तक के लेख किसी एक विशेष जाति, धर्म, समुदाय या संगठन को लक्ष्य बनाकर नहीं लिखे गए, बल्कि वे व्यापक सामाजिक प्रवृत्तियों के अध्ययन पर आधारित हैं।

“अयोध्या की कहानी समय की जुबानी” इतिहास और धार्मिक संदर्भों की पड़ताल करता है।“संस्कार और हम (लगाओ पेड़ हजार)” पर्यावरण और संस्कृति को जोड़ता है।“झूठ की महिमा, सच की खोज” सत्य और असत्य की समाज में प्रासंगिकता को दर्शाता है।“भ्रष्टाचार, नेता बने सपेरे, प्रजातंत्र बना लूटतंत्र” राजनीति में नैतिकता और मूल्यों के पतन की ओर संकेत करता है।“नशा: एक अभिशाप” सामाजिक बुराइयों पर कठोर प्रहार करता है।“बेरोजगारी और आरक्षण” समसामयिक मुद्दों पर प्रकाश डालता है।

इन लेखों में समाज की कुरीतियों, भ्रांतियों, और बदलते परिवेश को दर्शाने के साथ ही पाठकों को आत्ममंथन के लिए भी प्रेरित किया गया है। लेखक का दृष्टिकोण संतुलित और व्यावहारिक है, जो किसी भी तरह के पूर्वाग्रह से मुक्त है।

उनकी लेखन शैली सहज, प्रवाहमयी और विचारोत्तेजक है। उनकी भाषा जनसाधारण की समझ के अनुकूल है, जिससे उनके विचार सीधे पाठकों तक पहुँचते हैं। व्यंग्य, तर्क और भावनाओं का अद्भुत समावेश उनकी रचनाओं को प्रभावशाली बनाता है। आज के समय में जब समाज तेजी से बदल रहा है और मूल्यों में निरंतर गिरावट देखी जा रही है, तब “बदलाव” जैसी पुस्तकें अत्यंत आवश्यक हो जाती हैं। यह न केवल सामाजिक चेतना जगाती है, बल्कि युवा पीढ़ी को आत्मविश्लेषण और नैतिकता की ओर प्रेरित करती है।

“बदलाव” केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि सामाजिक दर्पण है, जिसमें हम अपने वर्तमान और भविष्य को देख सकते हैं। कृष्ण कुमार खटोड़ ने इस पुस्तक के माध्यम से न केवल समाज की विसंगतियों को उजागर किया है, बल्कि बदलाव लाने की दिशा में जागरूकता भी फैलाई है। यह पुस्तक उन सभी पाठकों के लिए अनिवार्य है, जो समाज को समझने और उसमें सकारात्मक परिवर्तन लाने के इच्छुक हैं।

डॉ राजपाल
हिंदी विभाग
गुरु गोरखनाथ जी
राजकीय महाविद्यालय हिसार

SHODH SAMALOCHAN ISSN: 2348-5639

International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

डॉ. राजपाल की रचना संसृति

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
सह आचार्य एवं शोध निर्देशक (हिन्दी विभाग) टॉटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

डॉ. राजपाल की रचना-रुचि बहुआयामी, बहुमुखी व बहुव्यापी है। ये अधिकतर गम्भीर विषयों पर विचारपूर्ण, सुसंगठित व गहन मनन की वक्तृता प्रस्तुत करने के अभ्यासी रहे हैं। कथा-कहानियों, उपन्यासों, निबंधों पर, विस्तृत पुस्तकों पर, ज्ञानात्मक लेखों पर इनके लेख, टिप्पणियाँ व समीक्षाएँ तथा इनके द्वारा स्वयं प्रणीत पुस्तकें इनके विराट विचार की योतक स्मारक हैं। इनकी यह विचारशीलता न केवल इनके अध्यापन में झलक कर बहुसंख्य विद्यार्थियों को पल्लवित-शिक्षित करती है कर रही वहीं साथ ही विश्लेषणात्मक साहित्य के ज्ञान सागर में संश्लेषित भी होती जाती है। डॉ. राजपाल का जन्म हिसार जिले में बरवाला कस्बे के निकट स्थित कल्वर मैणी नामक छोटे से गाँव में हुआ था। माता-पिता सामान्य से किसान थे, मगर उन्होंने अपनी सामान्य स्थिति में भी पुत्र को मनचाही शिक्षा दिलवाकर असामान्य उन्नति तक पहुंचाया। इन्होंने हरियाणा के कुरुक्षेत्र जिले में स्थिति विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। यद्यपि ये डॉक्टरेट होने से पहले ही लेखन में संलग्न रहे थे परंतु पीएच.डी. के उपरांत उनके लेखन में एक अलग ही त्वरा, मारक-दृष्टि एवं प्रवाहमयता का संधान हो गया। लेखन के प्रति गाम्भीर्य व गुणात्मकता का समावेश हुआ। उनके द्वारा रची गई प्रथम पुस्तक 'डॉ. धर्मचंद्र विद्यालंकार व्यक्तित्व व कृतित्व' है जो सुविख्यात साहित्यकार धर्मचंद्र विद्यालंकार के जीवन और लेखन पर एक बेहतरीन शोधपरक ग्रंथ है। इन्होंने इस पुस्तक में धर्मचंद्र जी के जीवन संघर्ष के साथ उनकी लेखन प्रतिभा व सामर्थ्य का तर्कपूर्ण और भावपूर्ण वर्णन किया है। डॉ. राजपाल की इस पुस्तक की भूमिका सुप्रसिद्ध साहित्यकार उदयभानु हंस ने लिखी है। अपनी इस भूमिका में डॉ. राजपाल की लेखन संदृष्टि व विषय-चुनाव से ये सहमत हैं। वे लेखन-विषय के सन्दर्भ में लिखते हैं, "वस्तुतः संवेदना और शिल्प की दृष्टि से डॉ. विद्यालंकार का विपुल रचना-संसार है। साहित्य की विविध विधाओं को समेटे हुए है।""

डॉ. राजपाल की आवश्यकता विभिन्न लेखकों को भी समय-समय पर पड़ती रहती है। अपनी कृतियों की भूमिका लेखन के लिए डॉ. राजपाल की लेखन प्रतिभा का प्रसाद ग्रहण करना उनकी प्रथम अभिलाषाओं में शामिल रहता है, इसलिए आप प्रभृति लेखकों की रचनाओं में इनके द्वारा लिखी गई सारपूर्ण, तथ्यपरक व विधा-संदर्भित रोचक भूमिकाएँ पढ़ सकते हैं। इन भूमिकाओं को पढ़कर डॉ. राजपाल की लेखनी का दिग्दर्शन तो होता ही है साथ ही मूल लेखक की सम्पूर्ण रचना का सारगर्भित विश्लेषणात्मक परिदृश्य भी मिल जाता है। कहने का अर्थ यही है कि ये भूमिकाएँ भी स्वयं में सहित्यिक रचना सा अधिभार रखते हुए लेखक की लेखन-गरिमा का चित्र प्रस्तुत करती हैं। डॉ. राजपाल द्वारा कुछ पुस्तकों में लिखी गई भूमिकाओं का वर्णन इस प्रकार है- 'हिंदी साहित्य का इतिहास', 'महान उद्योगपति विरला से सान्निध्य', 'हिंदी साहित्य को राजस्थान का योगदान', 'भारत के अनमोल रत्न- भारत के क्रांतिकारी', 'इतिहास की परिक्रमा', 'संत रविदास और दलित अस्मिता', 'वेद प्रचार', 'पंजाब में भारतीय संस्कृति व सन्तराम बी.ए. का लेखन सन्दर्भ', 'महापराक्रमी पुरुष महाराज सूरजमल', 'जम्भाणी साहित्य साधक संत साहबराम', 'फूल की खुशबू' आदि।डॉ. राजपाल एक तटस्थ शोधक व मर्मज्ञ दृष्टि के अध्येता रहे हैं। इससे इनके लेखन में स्तरहीन, उथला व गपबाजी से सना साहित्य किंचित मात्रा में भी नहीं पाया जाता है। इनका लेखन प्रामाणिक व साक्ष्यबद्ध होने के साथ-साथ लोकाचार की कसौटी पर कसा हुआ सत्यबद्ध साहित्य है। इन्होंने अपने लेखन को संकुचित दायरों व छोटे आयामों में कभी बन्धित नहीं होने दिया, बल्कि विषयों के चुनाव व सामग्री के ग्रहण में चहुंमुखी दृष्टि रखी है।

इनकी इस विराट चिंतना का चुनाव इनके विभिन्न शोध लेख हैं। यथा- 'हिंदी और भारतीय इतिहास का अन्तर्सम्बन्ध', 'भारत की आंतरिक सुरक्षारू भाषावाद व अन्य चुनौतियाँ', 'राष्ट्रीय सुरक्षा में हिंदी काव्य का योगदान', 'धर्मचंद्र विद्यालंकार की विचार-दृष्टि', 'संत साहबराम द्वारा विरचित- जम्भसाररू महाकाव्यत्व', 'कबीरदास के सामाजिक सरोकार', 'सत्ता संघर्ष और दलित अस्मिता', 'भारतीय संस्कृति के पुरोधा : सन्तराम बी.ए.', 'विश्व में हिंदी शोध-परिदृश्य' ।

डॉ. राजपाल के लेखन पर बाबा साहब अंबेडकर, महात्मा गांधी, सर छोटूराम आदि का प्रभाव प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सकता है। उनके लेखन में गरीब, शोषत व पीड़ित के प्रति सहभाव प्रकट होता है, वहीं भारतीय संस्कृति के सरोकारों से सम्बद्ध होने की उनकी सकारात्मक रुचि प्रदर्शित होती है। भारत के महापुरुषों में इनकी अगाध श्रद्धा तो है ही साथ ही देश की अखंडता एवं सुदृढ़ता में इनका सम्पूर्ण ईमान झलकता है। भारतीय दर्शन, संत मत विचार व महान परम्पराओं में इनकी गहन रुचि परिलक्षित होती है। अपने शोधपत्र 'डॉ. राजपाल की विचार-दृष्टि' में डॉ. सुरेंद्र कुमार सेलवाल लिखते हैं, "डॉ. राजपाल भी डॉ. अंबेडकर, सन्तराम बी.ए., महात्मा गांधी, जम्भाजी महाराज, संत रैदास जैसे विचार दर्शनों से ओत-प्रोत होकर रचनारत रहे हैं।"2

डॉ. राजपाल वाकई उपर्युक्त महापुरुषों से विचार-बीज ग्रहण कर पुष्पित-फलित वृक्षों जैसा साहित्य रच रहे हैं। इनकी लेखनी न केवल विषय चयन में माहिर है अपितु वर्णनीय दक्षता से भी लबरेज है। एक बानगी प्रस्तुत है, “जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है, तब यह निश्चित हो जाता है कि चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता जाता है। "3

डॉ. राजपाल का मन गम्भीर लेखन में ही रमता है, अर्थात खोखले मनोरंजक या दिखाऊ साहित्य में उनकी रुचि ना के बराबर है। हिंदी साहित्य के सुविख्यात निबंध लेखकों, शोधकों, इतिहासज्ञों की तरफ इनकी एकाग्रता इसका प्रमाण है। कथा-कहानी, काव्य आदि इनके विश्लेषण-संश्लेषण के विषय तो हैं, परन्तु स्वयं इन्होंने इस तरफ दृष्टि नहीं घुमाई है। कहने का तात्पर्य यही है, ये इनके साधन तो हो सकते हैं मगर साध्य नहीं हैं। इनकी विश्लेषण शक्ति निम्नोक्त द्रष्टव्य में प्रस्तुत है, "हमारा प्राचीन साहित्य संसार के अन्य देशों के साहित्य की अपेक्षा अधिक समृद्ध था। तभी तो विश्व के करीब-करीब सभी राष्ट्रों के लोग यहाँ शिक्षा ग्रहण करने आते थे।"*

डॉ. राजपाल बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यिक हैं, ये को अतिशयोक्ति नहीं है। साहित्य की एक नवीन विधा साक्षात्कार भी होती है। डॉ. राजपाल ने साक्षात्कारकर्ता की हैसियत से भी अपनी सबल उपस्थिति दर्ज करवाई है। उनके द्वारा किया गया प्रसिद्ध समाजसेवी चौधरी धनीराम का साक्षात्कार 'वज्र से कठोर- फूल से कोमल' शीर्षक से छपा था, जो साहित्यिक गलियारों में महत प्रशंसित हुआ। यहाँ डॉ. राजपाल द्वारा पूछे गए एक प्रश्न के उदाहरण से समझिए, "क्या आपको कभी एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में अपने अनुभवों में नैतिक संघर्ष का सामना करना पड़ा? आपने स्थिति को कैसे सम्हाला?"5

इनके द्वारा पूछे गए इन प्रश्नों में साक्षात्कार-प्रदाता को भाव-विह्वल कर उसका गहरा संवेदन रूप उभारने की क्षमता
प्रदर्शित होती है, जो डॉ. राजपाल जैसे संवेदी व्यक्तित्व के धनी साहित्यिक में ही हो सकती है।

डॉ. राजपाल न केवल डॉक्टरेट हैं बल्कि अमेरिकन विश्वविद्यालय द्वारा डी. लिट्. की उपाधि से सम्मानित हैं। उन्हें ये उपाधि उनके साहित्यिक अवदान के सापेक्ष मिली है। इन्होंने अन्यत्र भाषा साहित्य को भी अपनी भाषा में पाठकों को उपलब्ध करवाने के लिए 'अनुवादक' की उपाधि प्राप्त की है और इनके द्वारा कई अनुवादित पुस्तकें इस समय प्रकाशन प्रक्रिया में हैं। सन्तराम बी.ए. अनुवाद को बहुत महत्व देते थे। वे मानते थे, "हमारे देश में अभी अनुवाद कार्य को कोई महत्व नहीं दिया जाता। अनुवाद और अनुवादक के प्रति लोगों में अभी आदर बुद्धि नहीं। परन्तु यह एक भाई भूल है। अनुवादक सभ्यताकी एक बहुमूल्य सेवा करता है।""

भारत जैसे देश में अनुवादित साहित्य की बहुत आवश्यकता है ताकि हम विश्व की अन्य सभ्यताओं व संस्कृतियों से जरूरी सान्निध्य कर सकें। डॉ. राजपाल सन्तराम बी.ए. के प्रवल अनुरक्त व प्रशंसक हैं। उनकी राह को इन्होंने अपनी राह बनाया है। आशा है इनके द्वारा अनुवादित महत ग्रंथ है जिसमें स्वास्थ्य दर्शन, सक्सेसफुल पेरेंटिंग, कौटिल्य का अर्थशास्त्र और प्रबंधन, व्यावसायिक नैतिकता आदि दी है। सम्पूर्ण लेख का सार यही है कि डॉ. राजपाल वर्तमान में बहुमुखी प्रतिभा, तर्कपूर्ण दृष्टि से पूरित मानवतावादी साहित्यकार हैं।

सन्दर्भ

1. डॉ. राजपाल, धर्मचंद्र विद्यालंकार व्यक्तित्व एवं कृतित्व
2. डॉ. सुरेंद्र कुमार सेलवाल, डॉ. राजपाल की रचना दृष्टि
3. डॉ. राजपाल, हिंदी साहित्य की भूमिका
4. डॉ. राजपाल, भारत की सुरक्षा चुनौतियाँ
5. डॉ. राजपाल, वज्रज से कठोर फूल से कोमल
6. सन्तराम बी.ए., मेरे जीवन के अनुभव

हरियाणवी काव्य पाठ में निधि प्रथम रही

हिसार | राजकीय कॉलेज में भौतिकी विभाग के प्रोटोन क्लब ने पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता करवाई। विद्यार्थियों ने भौतिकी विज्ञान के विभिन्न उपकरणों के पोस्टर बनाकर रचनात्मक कला का प्रदर्शन किया। मीडिया प्रभारी प्रो. मनोज कुमार ने बताया प्राचार्य डॉ. विवेक सैनी ने विज्ञान के प्रति अपना रुझान बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रतियोगिता की संयोजक डॉ. कीर्ति ने छात्रों को भौतिकी विज्ञान के प्रति जागरूक किया। विभागाध्यक्ष डॉ. करण सिंह गिल ने विद्यार्थियों की रचनात्मक कौशल का बेहतरीन प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया। प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका डॉ. रामसिंह, डॉ. बुल्केश एवं डॉ. कोमल ने निभाई। हिन्दी विभाग अध्यक्ष डॉ. कमलेश खालिया और हिन्दी साहित्य परिषद के प्रभारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने बताया कि राजकीय कॉलेज हिसार परिसर में उमंग के अंतर्गत हिंदी साहित्य परिषद ने हिन्दी और हरियाणवी काव्य पाठ प्रतियोगिता करवाया। निर्णायक की भूमिका डॉ. सीमा, डॉ. नीतिका, डॉ. मुकेश कुमार ने निभाई। हरियाणवी काव्य पाठ प्रतियोगिता में निधि ने प्रथम स्थान, दीप्ति शर्मा ने द्वितीय और रेखा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया है। हिन्दी कविता पाठ में रितु ने प्रथम स्थान, दीप्ति ने द्वितीय स्थान और नैन्सी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

प्रो. कुमुद शर्मा 'महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय' की कुलपति नियुक्त

6 मार्च को वर्धा में 'साहित्य अमृत' की पूर्व संयुक्त संपादक रहीं विदुषी प्रो. कुमुद शर्मा को प्रतिष्ठित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा का कुलपति नियुक्त किया गया है। वे साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष हैं, दिल्ली विश्वविद्यालय की हिंदी विभागाध्यक्ष रहीं। उनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित होकर चर्चित हुई हैं।

हिन्दी की पुकार

हिन्दी पर कैसा वार हुआ|
वैदिक संस्कृत से लौकिक संस्कृत हुआ |
लौकिक संस्कृत से पालि प्राकृत हुआ |
पालि प्राकृत से अपभ्रंश हुआ |
अपभ्रंश से अवहट्ट हुआ |
अवहट्ट से ब्रज हुआ |
अंग्रेजी ने वार किया हुआ |
हिन्दी को हटाने का प्रयास हुआ |
जन-जन ने पुकारा हुआ |
हिन्दी ही हमारा गौरव हुआ |

स्वंय रचित कविता
नाम रीनू
2242422044

खुली किताब

खुली किताब हूं मैं, मुझको कोई नहीं पढ़ता।
आते जाते है मुसाफिर, मुझमें कोई नहीं झांकता।
कोई दो घड़ी बैठ के मुझको, कोई निहार तो ले।
एक दो पन्ने पलटकर, मेरी मिट्टी को झाड़ तो ले।
खोया हुआ प्यार मुझमें,
कोई नहीं ढूंढता। आते जाते मुसाफ़िर,
मुझमें कोई नही झांकता।
खुली किताब हूं मैं, मुझको कोई नहीं पढ़ता।
हर कोई डरता है मुझमें किसी का राज तो नहीं,
बीते पल में किसी से कहे, कोई अल्फ़ाज़ तो नहीं।
अपने जख्मों को फिर से, कोई नहीं कुरेदता।
आते जाते है मुसाफिर, मुझमें कोई नहीं झांकता।
खुली किताब हूं मैं, मुझको कोई नहीं पढ़ता।

डॉ आर पी राज